॥ श्रावणशृङ्गार ॥

अर्थात्।

जिसे में झूलन, मलार और अनेक धुन की चोटीली २ नवीन कजलियां और सावनी रसिकों के आनन्द देनेवाली, अपने करमोदार कायस्थकुलदिनेश सूर्य्यपुराधिपति श्रीमान् राजा राजराजेश्वरी प्रसादसिंह तथा (प्यारे) जू के चित्त विनोदार्थ

मारकंडे कवि कोपागञ्ज निवासी ने स्वयम् निर्माण करके मुद्रित कराया।

बनारस।

भारतजीवन यन्त्रालय।

1903

द्वितीय बार मूल्य प्रति पुस्तक।)

श्रावणशृङ्गार ।

श्री महारसिकाधिराज युगलमूर्त्ति चरण
कमलेभ्यो नमः ।

दोहा ।

नवल मेघ सावन नवल, नव कुंजन आनन्द ।
नव मयूर यमुना नवल, नव राधेनन्दनन्द ॥

झूलन मलार ।

आज दोउ झूलत रंग भरे । नन्दनन्दन वृषभानुनन्दिनी, नवल शरीर धरे ॥ हिल मिल रस बस होत परस्पर, मनसा सुफल फरे । निरखि मारकंडे यह मूरति, जोवन सुफल करे ॥ १ ॥

झूलन मलार ।

आज दोउ झूलत मोद भरे । स्यामल गौर किशोर बरन वर, आनद उरं उभरे ॥ अपनी युगल रूप छवि ऊपर, रतिपति मद्ध निदरे । मारकंडे बिलोकि यह शोभा, चारो फलनि फरे ॥ २ ॥

झूलन मलार ।

आज सखि झूलत माखनचोर । श्रीवृषभानुलाड़िली

राधे, श्रीनदनन्दकिशोर ॥ श्री ब्रजयुवति प्रेमरसमाती, श्री-गुपाल गुन जोर। निरखि मारकंडे हिय हुलसत, सुखमा सरस अथोर ॥ ३ ॥

झूलन मलार।

हिँड़ोरे झूलत युगलकिशोर । श्रीनदनन्द प्रिया अल-बेली, श्रीराधे चितचोर ॥ सूर्य्य कोटि प्रति प्रभा विराजत दामिनि लच्छ करोर। हुलसि मारकंडे गुन गावत, लखि लखि प्रभु की ओर ॥ ४ ॥

झूलन मलार।

हिँड़ोरे झूलत द्वौ ब्रजचन्द। इक स्यामल इक गौर व-पुष वर, सब सुखमा के कन्द ॥ हरषि हरषि रस लेत पर-स्पर, बिहँसत बोलत मन्द। डरत धरत हियँ लगत चिहुंकि जब, चलत हिँड़ोर अमन्द ॥ गावत गीत सावनो सुन्दर, परे प्रेम के फन्द ॥ कहत मारकंडे छबि लखि लखि, अति उर होत अनन्द ॥ ५ ॥

झूलन मलार।

आज दोउ झूलत अति सुख पावत । नन्दनन्दन ब्रज-कुंअरि राधिका, मदन हिये सरसावत ॥ मारत पेंग ललन उठि कबहुंक, कबहुं प्रियो उर लावत। कबहुं प्रिया गिरि-वेते बाँचति, हरि उठि कंठ लगावत ॥ रतन हिँडोर चढ़े

छवि आकर, मन्मथ रतिहि लजावत । निरखि मारकंडे पुलकित अति, अनुदिन हरि गुन गावत ॥ ६ ॥

झूलन मलार ।

आज दोउ झूलत नवल हिंडोर । नवल किशोर नवल वृन्दावन, नवल मदन की जोर ॥ नवल बदन नव दामिनि दरसत नवल कुहूकत मोर । नवल मारकंडे छवि बरनत नवकुंजन की ओर ॥ ७ ॥

झूलन मलार ।

आज दोउ कुंजन में सुख पावत । नन्दनदन वृषभानु-नन्दिनी, पावस में छवि छावत ॥ गरजत मेघ मयूर हँकारत, बिज्जु तड़पि डेरवावत । भींजत खड़े कदम्ब तरे अति अन्तर रस सरसावत ॥ घेरत बून्द प्रिया हरि उर लागति हरि हँसि कंठ लगावत । प्रिया ओढ़ावति अंचल लालहि, लालन ललिहिं बँचावत ॥ चलत पौन सहरात अंग वर, मदन हियो उसकावत । निरखि मारकंडे यह सुखमा प्रेम सहित गुन गावत ॥ ८ ॥

मलार ।

मेघवा गरजि गरजि दल आवत । तड़पत बिज्जु बून्द बरसावत, जिय कुल कानि मिटावत ॥ पैरेन पछारत मारत दादुर, मोर मरोर जनावत । मारकंडे बिनु श्यामसुन्दर के, मदन हियो ससकावत ॥ ९ ॥

मलार ।

मेघवा गरजि गरजि डेरावत । जब से पिय परदेस पधारे, जोबन जुलुम जनावत ॥ सोरह सिंगार बतीसो अभरन, एको छबि नहिं पावत । मारकंडे मन मदन उँड़ेरत, बरबस हियो सतावत ॥ १० ॥

मलार ।

लाड़िलो बादर प्रभुहि देखावत । चढ़ी अटा अटकी सनेह पथ, नैनन सैन बुझावत ॥ मेलि एक कर कण्ठ खड़ी ह्वै दूजे करहिं उठावत । यह कारी यह पीरो कहि कहि अंगनि उरज छुआवत ॥ बरसत मेंह नेह सरसावत, सुख मलार उनुनावत । बरनि मारकंडे यह सुखमा, अति अनन्द उर पावत ॥ ११ ॥

मलार ।

प्रिया मुख चूमत आनदकन्द । डरपत चढ़ी हिंडोर लाड़िलो, उर लावत नदनन्द ॥ ढाढ़स देत ढरकि ढिग बैठनि, करति किती छलछन्द । सखिन सोख दै अनत तकावति, आपु रहति दहचन्द ॥ रसिक मारकंडे गुन गावत, मिटत सकल दुखदन्द ॥ १२ ॥

मलार ।

आज दोउ पावस मैं छबि छावत । चढ़े अटनि छिति छोड़ि छैल जुग, आनन ओप बढ़ावत ॥ कबहुं प्रिया प्रभु

मुकुट सम्हारत, कबहुं झगा सुधरावत। कबहुं लाल शृङ्गारि ललौ को, उर कंचुकी बँधावत॥ कबहुं प्रिया दरपन ले निज कर, हरि सामुहे दिखावत। कबहुं ललन निज नैन निरखि छवि, हिये माह गुन गावतं॥ यह ब्रह्मादि पूज्य युग मूरति, अनुपम वेद बतावत। बरनि चिरंजीवो यह सुखमा, उर आनन्द बढ़ावत॥ १४॥

मलार।

आज हरि भीजत कदम तरे। बरसत मेह नेह सरसावत, लाड़िलो अङ्क भरे॥ जहँ जहँ घनो छांह तरुवर की, तहँ तहँ होत खरे। तड़पति बिज्जु प्रिया मुख मूंदति, डरिडरि कहति अरे॥ निरखि चिरंजीवो गुनगावत, आनँद हर उभरे॥

मलार।

आज प्रभु गावत राग मलार। बर मुरलिका लिये ब्रज जोवन, सुखमा सिन्धु अपार॥ बरसत मेह बदरिया दरसति, दामिनि करत बिहार। चिरजीवो मन मोद बढ़ावत, लखि लखि नन्दकुमार॥ १५॥

झूलन ठुमरी।

चल देखु री झूलि रहे ब्रज में, वृषभानुलली यसुदा-किशोर॥ चढ़े रत्नहिंडोर उमंग भरे, सुख लूटि रहे चख जोर जोर। छबि सुन्दर स्यामल गौर गात, प्रति अंग लसत भूषन अथोर॥ चिरजीवो कबहुं प्रिया डरति हिये, हरि हँसत मंजु मुख मोर मोर॥ १६॥

झूलन ठुमरी।

वृषभानुनन्दिनो नन्दनन्दन, दोउ झूलत आज अनन्द भरे। बर सुन्दर स्यामल गौर गात, पट नील पीत नूतन सुथरे॥ जनु स्वेत नील मनि शिखर स्वच्छ, अति सोहत मानुष भेक धरे। अभिराम नैन आनन अनूप, कर पद मृदु मधुर बचन उचरे॥ मनु मीन सोम पङ्कज पियूष, जल नभ सर अम्बुधि माह टरे। चिरजीवो कहत यह छबि बिलोकि, निज जीवन को फल सुफल करे॥ १७॥

झूलन ठुमरी।

हरि झूलत आज कदम्ब तरे, वृषभानुसुता निज अङ्क भरे॥ जमुनातट श्यामल गौर गात, सकलानिधि आनन ओप धरे॥ कमनीयकलेवर कमलनैन, कर पद मृदु मंजुल माल गरे॥ चिरजीवो बिलोकतही रहिये, छबि सुन्दर नैन चकोर करे॥ १८॥

झूलन ठुमरी।

ब्रज छयल लाड़िलो अलिन संग, मंद मत्त कुञ्ज में झूलत हैं। चढ़ रत्नहिंडोर उमंग भरे, अति आनद ते हिय फूलत हैं॥ बपु बैस बुद्धि अरु बानिकहू, सबै आपुस में सम तूलत हैं। चिरजीवो कहत वह युगल रूप, उर ते नहिं नेकहू भूलत हैं॥१९॥

झूलन ठुमरी।

दोउ झूलत झूलन मोद भरे, ब्रज कुञ्जन बीच विराजत हैं। वृषभानुनन्दिनी नन्दनदन, नव गोप बधू संग छाजत हैं॥ छबि सुन्दर स्याम किशोर बैस, रति मारकरोरन लाजत हैं। हरषात परस्पर युगल छैल, मद जोवन के उर गाजत हैं॥ सिंगार सिंधु सुखमा नरेश, सर्वाङ्ग स्वच्छ अति साजत हैं। चिरजीवी बिलोकत नेकु छटा, अघ ओघ देह तजि भाजत हैं॥ २०॥

झूलन मलार।

आज दोउ झूलत जन मन चोर। रतन जड़ित अति सुभग हिंडोरे, ब्रज जन चन्द चकोर॥ नन्दनदन वृषभानुनन्दिनी इक स्यामल इक गोर। निरषि चिरजीवो हिय हरषत, सुखमा सरस अथोर॥ २१॥

मलार।

प्रियामुख चूमत हरि न अघात। पावस में चढ़ि अटा उभय दोउ, हिलि मिलि पकरा खात॥ जोबन के मद छके छैल छुटि. करत बिविध छल घात। चिरंजीवी बिलोकि दोउ मूरति, बार बार बलि जात॥ १२॥

मलार।

प्रिया तुव युगल नैन बटपार। जहँ तहँ पकरि धर्म धर्न लूटत, नेकु न लावत बार॥ यह अनर्थ योबन दुराज

मह्वँ, कोउ नहिं सुनत पुकार। कहत चिरंजोवी तातें तूं, आपुहि आनि सम्हार ॥ २२ ॥

मलार।

आज बन भींजत युगल किशोर । कीरतिसुता कान्ह अलबेलो, कालिन्दी की ओर ॥ बरसत बून्द धून्ध सो दीसत मारुत करत झकोर। उभय परस्पर अंग बचावत, करि २ यतन करोर ॥ बोलत मोर मनोज मरोरत, भेक करत चहुं सोर। चिरजीवी प्रभु प्रिय हिय लावत, प्रिया हँसति मुख मोर ॥ २४ ॥

कजली—हरी।

जमुना के तीरे तीरे बाजे लै बँसुरिया रामा, राधे माधो खेलै लैं कजरिया ए हरो ॥ हरि जो के सोहै सुन्दर पीताम्बर कछनियां रामा, राधे जो के सोहै सुन्दर सरिया ए हरी ॥ हरि जो गावै लैं झुमझुम रस के कजरिया रामा, राधे दुरि दुरि मारैलीं नजरिया ए हरो ॥ कहै चिरजीवो सुन्दर सावन के महिनवां रामा, छूटि जाले जिअरा के धधरिया ए हरो ॥ २५ ॥

कजली—हरी।

कजरी के दिनवां में कन्हैया मद के मातल रामा, राधे के लगौले गरवां डोलैं ए हरो ॥ अपने भिंज भिंज राधे के

बचावें दुनिया परले रामा, केहुके बोलौले नाहीं बोलैं ए हरो ॥ दूनों जनी गावें छतिया छतिया में लगौले रामा, परवस छैके आपन जियरा खोलैं ए हरो ॥ कहै चिरजोवी ओही सावन के महिनवां रामा, गोकुला नगरिया में कलोलैं ए हरी ॥ २६ ॥

कजली—हरी ।

वृन्दाबन में हो खेलै कजरिया दिनवां रतिया रामा, राधे माधो जिअरा न सम्हारैं ए हरो ॥ मदिया के मातल हमरे रस के भँवरवा रामा, गरवा में तुलसि के हथवा डारैं ए हरो ॥ कजरी अलापैं दुरि दुरि भौंआ ले बतावें रामा, आपुस में नजरिया तिरछी मारैं ए हरो ॥ कहै चिरजोवी सुन्दर सावन के महिनवां रामा, जिअरा के ललसवा सब निकारैं ए हरो ॥ २७ ॥

कजली—हरी ।

सामी के सुरतिया हमरे जिअरा में धँसलि हो रामा, हमके ना सोहाले कौनों बतिया ए हरो । गौवन के पिछवां लिहलैं हथवां में मुरलिया रामा, हँसि हँसि के बोलैं मीठी बतिया ए हरो ॥ मौर के मकुटिया औरो पीताम्बर कछनियां रामा बरबस जिअरा मोहेले सुरतिया ए हरो ॥ कहै चिरजोवी ओही गोकुल को नगरिया रामा, कजरी गावैलैं दिनवां रतिया ए हरी ॥ २८ ॥

कजली—हरी।

अब त जियरा स्याम के सुरतिया पर लोभैलैं रामा उनके छोड़ के कतहूं अब न जैबै ए हरी ॥ जतिया धरमियां सज्जे मटिया में मिलैबै रामा, उनहीं के गोहनवां मुखवा पैबै ए हरी ॥ केतनो केहू कहिहैं पै हम मनबै ना कहनवां रामा, अपने गरजिया हम त गैबै ए हरी ॥ कहै चिरजीवो हमके हँसै ना मुलुकवा रामा, सामी से सनेहिया हम लगैबै ए हरी ॥ २९ ॥

कजली—हरी।

निखरलि देहियां तोहरी फिर गेलीं नजरिया रामा सज्जे लरिकैयां चलल गेलीं ए हरी ॥ बहियां भरैलीं भैलीं पतरी कमरिया रामा, बटिया कै चलैया धिरवा धैलीं ए हरी ॥ बोलिया मिठैलीं ऐलीं जियरा में सउखिया रामा, सगरी नगरिया बेकल कैलीं ए हरी ॥ कहै चिरजीवो कुछ कुछ छतियां उँचैलीं रामा, तबहूं अकलिया नाहीं ऐलीं ए हरी ॥ ३० ॥

कजली—हरी।

गोरिया के देहियां बिचवां भइल बा बदलली रामा, जोबना कुंवरसिंह नाहीं माने ए हरी ॥ नैना सिपाही बिगड़ल लूटैं लैं मुलुकवा रामा, केहू के न जग में पहिचानैं ए हरी ॥ छपवा मारैलैं आधी रतिया भिनसरवां रामा.

हाकिमै हुकुम एको नाहीं जानें ए हरी ॥ कहै चिरजीवी अब लुकैबे कौनी ओरिया रामा, हमहूं के कमनियां भौंवां तानें ए हरी ॥ ३१ ॥

कजली—हरी ।

जानो के जोबनवां जहिया होइ जैहैं टोटारू रामा, चलिहैं ना जगतिया में डगरिया ए हरी ॥ साध होइहैं सेवक सिपाही होइहैं चाकर रामा, रजओ हँटके रहिहं एक कगरिया ए हरी ॥ दुल्हा होइ के गोडे के गुलमवां गुनवां गैहैं रामा, गौना खातिर करिहैं रोज रगरिया ए हरी ॥ कहै चिरजीवी कितने चोलियन के मसकिहैं रामा, सवती के करिहैं जिउ अजरिया ए हरी ॥ ३२ ॥

कजली—हरी ।

ढरिहैं ना जोबना ऐसन जानो के फिर तौले रामा, जगवा के जुलुमवां नाहीं जैहैं ए हरी ॥ जियरा वियोगी बिना देखले ना थम्हैंहैं रामा, लवनो उपैया ना बँचैहैं ए हरी ॥ घरवा दुअरवा ओ इजतिओ के नसैहैं रामा, धरमों में बटवा ना लगैहैं ए हरी ॥ कहै चिरजीवी बन के बासी उपबासे रामा, सबही के निअरा के लोभैहैं ए हरी ॥३३॥

कजली—हरी ।

छतियां उपरां भेजौं भौजो हमरे दुइ पिरिकिया रामा, कौने में ओखदिया के लगाओं ए हरी ॥ काहें मुस्कियालिव

हमके श्रीखदा ना बताव रामा, कौने मैं बइदवा के देखाओं ए हरी ॥ नौवां हो कन्हैया ननदो गोकुला नगरिया रामा, उनहीं के बइदवा में बताओं ए हरी ॥ कहे चिरजीवी उनकी छुअते अच्छा होइहैं रामा, चल उनके घरवां में देखाओं ए हरी ॥ ३४ ॥

कजली—हरी ।

उठलीं जुअनियां गोरि कैं देहियां निखरेलीं रामा, जोबना उनके छतियां पर जनालैं ए हरी ॥ फिरे लगलीं डिठिया उनकै बोलियो मिठैलीं रामा, छतिया पर अँचरवा कुछ तनालैं ए हरी ॥ पुरहुर चंनरमा ऐसन चमकै लगलैं मुहवां रामा, ढपलों पर अँचरा मुह छनाले ए हरो ॥ कहै चिरजोवो उनकै पतरो सुरतिया रामा, घरो घरो जियरा में गृनाले ए हरो ॥ ३५ ॥

कजली—हरो ।

जोबना महादेव मधु मास के महिनवां रामा, चोलिया सिवलवा में सोहालैं ए हरी ॥ बेलपात प्रीत से प्रसन्न भले होलैं रामा, दाल भात धन सेऽकोहालैं ए हरी ॥ अवढर दानी जानो सेवा पर ढरेलैं रामा, रखिया रसिकवन से छोहालैं ए हरो ॥ कहै चिरजीवी मन के गंगाजल पनियां रामा, मल मल भले धोवले से मोहालैं ए हरी ॥ ३६ ॥

कजली—हरी ।

गोरिया गवनवां भेलें ऐलीं अपने घरवां रामा, तबहूं ना कजरिया पिउ के लागें ए हरी ॥ दिनवां औरो रतिया सूतें सासु जी के कोरवां रामा, तीनो पुर सैयां के डरवां लागें ए हरी ॥ जानी के जोबनवां भेलें जिअरा के कवाहत रामा, सवती के संगवां सुखवा पागें ए हरी ॥ कहे चिरजीवी उनके बनियां कुबनियां रामा, सामी के सुरतिया देखले भागें ए हरी ॥ २७ ॥

कजली—हरी ।

गोरिया बिअहवे बिदवा होय के घरवां ऐलीं रामा, सैयां के गोदनवां जाये लगलीं ए हरी ॥ देहियां निखरलीं जोबना भेलें जिउ के घाती रामा, सामी के सुरतिया माथे लगलीं ए हरी ॥ गैलीं नदनियां जिअरा जमलो अकुफिया रामा, अँखिया में सनेहिया छाये लगलीं ए हरी ॥ कहे चिरजीवी अवत चेतलीं आपन घरवा रामा, हरी जी के पनवां खाये लगलीं ए हरी ॥ २८ ॥

कजली—हरी ।

दुलहा औ नउआं सुनके काहे के परालिउ रामा, काहे रतियां सूतैलिउ अकेलवां ए हरी ॥ घुसरल रहे लिव सञ्जे दिनवां कौनो ओरिया रामा, काहे ना देखालिव एको बेलवां ए हरी ॥ अवत नैखो लरिका भैलिव दुरहुर तिरिअवा

रामा, सैयां से न करतिव काहें मेलवा ए हरी ॥ कहै चिरजीवो अबहीं होखेलिव को नाहीं रामा, काहें छोड़े सैयां अलबेलवा ए हरी ॥ ३८ ॥

कजली—हरी ।

दुलहा से न दिनवां के तूं बोलेलिव सँवलिया रामा, रतिया के कसाव काहें चोलिया ए हरी ॥ दिनवां के त पनियां मंगले पिँछउड़ फिरेलिव रामा, रतिया के बोलेलिव पिउ पर बोलिया ए हरी ॥ दिनवां के न बालम तूं जेवावे लिव रसोइयां रामा, रतिया के करेलिव हमजोलिया ए हरी ॥ कहे चिरजीवो कैसन चलिया ई परलि हो रामा, मार ऐसन चलिया उपरां गोलिया ए हरी ॥ ४० ॥

कजली—हरी ।

जानो जैसे रभा फूट के होइ गेलीं कचभा रामा, चलले पिरिथिया उनके काँपे ए हरो । मसर मसर करे उनके बहियाँ भराइल रामा, जोबना अभिमनवां जिअरा नापे ए हरी ॥ सम्हरल चलेलीं फुलकावले अँचरवा रामा, देखि २ सवतिया जिभिया चाँपे ए हरो ॥ कहे चिरजीवो भले ताकें ना सम्हनवां रामा, थपरो बजौले मुंहवां ढाँपे ए हरी ॥ ४१ ॥

कजली—हरी ।

गोरिया उगरिया ऐसन सम्हरल चलेलीं रामा, कि तनिको ना जोबनवां उनके दलके ए हरो ॥ खींचो गोभ-

नोटा ऐसन ढोलैलीं अँचरवा रामा, कि तनिको नाहीं दे-हियां उनके झलके ए हरी ॥ बतिया कहैलीं तबहूं ताकैं ना सम्हनवां रामा, देखि देखि के बिरोगो जिअरा कलकै ए हरो ॥ कहै चिरजीवी ऐसन देखैं को सुरतिया रामा, हमरो करेजवा भितरां ललकै ए हरी ॥ ४२ ॥

कजली—हरी।

नैना सिपाही गोरिके करैलें जुलुमवां रामा, केहू नाहीं लागैला गोहरिया ए हरो ॥ भौंवां कमनियां बँधले डोठिअन के तिरिया रामा, गलिया गलियां फिरलैं अहेरिया ए हरी ॥ केहू से न मानै अपने मनवें के उठाने रामा, डोलल फिरैं जालिम खोरिया खोरिया ए हरी ॥ कहै चिरजीवो हरदम अँकड़ चलैलें रामा, सबहो से करावैलें जुहरिया ए हरो ॥ ४८ ॥

कजली—हरी।

रतिया के जागल जानो उतरैलीं अँटरिया रामा, आवत के अँगनवां में लजालीं ए हरो ॥ मसकलि चोलिया बोलिया बोलैले भउजिया रामा, जानो त लजालीं नाहीं जालीं ए हरो ॥ ढांपेलीं जोबनवां ना ढँपालैं जिउ के घाती रामा, बूझि बूझि हियरा में समालीं ए हरी ॥ कहै चिर-जोवी अबहीं आल्हरी उमिरिया रामा, घरवा में जाये के अकुतालीं ए हरो ॥ ४४ ॥

कजली—हरी ।

गलिया गलिया फिरेलिव बिकाइल बिना दमवें रामा, हमसे काहें जिउआ के चोराव ए हरो ॥ सखियन से बोलि बोलि लसवा तूं लगौलिव रामा, हमसे काहें नेहिया के ओराव ए हरो ॥ उठि के सबेरवां अँठिलाइल कहवां जालिव रामा, जुलुमो जोवनवां ना हिराव ए हरो ॥ कहै चिरजीवो मातल फिरेलिव बजरिया रामा, काहें परदेसिअन के बोलाव ए हरो ॥ ४५ ॥

कजली—हरी ।

एक दीन औते सैयां मोरे तैं दुअरिया रामा, हमरी नजरिआ जुड़ववते ए हरो ॥ साँवरो सुरतिया सुन्दर सीस पर मकुटिया रामा, मोहनो मुरतिया बेन्हमवते ए हरो ॥ फिरो वृन्दावनवां के कुञ्ज की गलिनियां रामा, मुरली में हमके तैं बोलवते ए हरो ॥ कहै चिरजीवो अपनी आलहरी जुअनियां रामा, सबसे सनेहिया के छोड़वते ए हरो ॥ ४६ ॥

कजली—हरी ।

गोरिया कोंहाइल सेजिया सोहै मनवां मरले रामा, सैयां के मनौले नाहीं माने ए हरो ॥ अँखिया लजौंहो जैसे भरली खुमरिया रामा, डोठिअन के भौंवां तिरिया ताने ए हरो ॥ बोलेले न चाले नाहीं तनिको मुसुकाले रामा, सामो के मुदैया ऐसन जाने ए हरो ॥ कहै चिरजीवो हरिके ठाढ़हू सम्हनवां रामा, झुठहू ना पिया के सनमाने ए हरो ॥ ४७ ॥

कजली—हरी ।

जब से बलमुवां तैं गढ़ैंवे ना झुलनिया रामा, छूवे नाही देवौं वाला जोबना ए हरी । मुहवों न बोलवै औ न ऐवे तोरे कोरवँा रामा, दिनवां रतियां करवे जिउ के खोभना ए हरी ॥ जेहि दिन गढैवे तोकी हियरा में लगैवें रामा, छतिया में धँसैवे दूनो गोभना ए हरी ॥ कहै चिरजीवी एकठे झुलनो पर तिरियवा रामा, पियवा कै करैले जिउ के डोभना ए हरी ॥ ४८ ॥

कजली—हरी ।

कहवां गँववलिव सारो रतिया हमरो जानो रामा, घरवां अपने ऐलिव एतनो बेरियां ये हरी । सेंदुरा मिटैलैं गैलें मँथवा पर कै बुंदवा रामा, चोलिया मसकलीं फटलीं सैरिया ए हरी ॥ चुरिश्रो नसैलीं भैलीं अँखियो रतनारी रामा, केकरे साथे केलिव बरजोरियाँ ए हरी ॥ कहै चिरजीवी काहें पुछले पर रिसालिव रामा, काहें भैलिव गोरी सेतूं करिया ए हरी ॥ ४९ ॥

कजली—हरी ।

बीचहो डगरिया हम के रोकै लैं कन्हैया रामा, दहिया बेंचे जाये नाही देलैं ए हरी ॥ दहिया के बहाने मोरा धरलैं अँचरवा रामा, बाला जोबना हँथवा धर धर खेलैं ए हरी । केतनो कहोला नाही मानैलें कहनवाँ रामा, हम के

डगरिया में ठकेलें ए हरी । कहै चिरजीवो अब ना ऐबै इ नगरिया रामा, बरबस इजतिया हमरी लेलैं ए हरी ॥५०॥

कजली—हरी ।

सावन के महिनवाँ कान्हा खेलेलें कजरिया रामा, राधे के लगोले अपने गरवां ए हरी। हाथ में मुरलिया माथे मोर के मकुटिया रामा, राधे के चँदरिका गरवा हरवा ए हरी। पीताम्बर कछनियां के पियारो के चुनरीया रामा, सोहै ले सुरतिया अपरंपरवा ए हरी। कहै चिरजीवो दूनो देख ले सुरतिया रामा, छूटी जाला घरवा औ दुअरवा ए हरी ॥५१॥

कजली—हरी ।

झूलैलैं हिंडोरवा राधे माधो के मातल रामा, बांसुरी में गावे लें कजरिया ए हरी॥ गोर सोहैं राधे औ कन्हैया सोहैं साँवर रामा, उन्के सोहै धोतिया उन्के सरिया ए हरी॥ उन्के माथे मकुट मोरैला के सोहाला रामा, उन्के माथे चन्द्रिका अगड़िया ए हरी॥ कहै चिरजीवो दूनो मोहैले सुरतिया रामा, छूट जाले जिउआ के अजरिया ए हरी॥ ५२॥

कजली—हरी ।

उहवें जा बलमुआं जहवां रतिया तैं बितौले रामा, जेकरी सुरतिया पर लोभैले ए हरी । मँथवा पर महावर गलवा मीसिया के दगिया रामा, जहँवाँ बिना दमवां कें

बिकैले ए हरी ॥ सँभावें से तें गेले ऐले भेले भिनुसरवा रामा, तेह्न पर बोलेले अनुसेले ए हरी ॥ कहै चिरजीवो तोरी बनियां औ कुबनियां रामा, नहके सुघनियां माटी कैले ए हरी ॥ ५३ ॥

कजली—हरी ।

चार दिन के जिनगी के नाहिन ठेकाना रामा, नाहक लोगवा करैं अभिमनवां ए हरी ॥ थकि हैं जँगरवा एक दिन अंखिया धुमिलैहै रामा, एकहू न होइ है तब अरमनवां ए हरी ॥ जेकरे भरोसे उमड़ल घूम चारो ओरिया रामा, तेह्न ना पुजैहैं मन के मनवां ए हरी ॥ कहै चिरजीवो सब से मिलल तूं सबेरे रामा, माटी होइ हैं आखिर सब समनवां ए हरी ॥ ५४ ॥

कजली—हरी ।

सोनवां ऐसन देहियां एक दिन मटिया में मिलै हैं रामा, काहे नाही चेतल कन्हैया ए हरी ॥ छूटी जैहैं घर बन घोड़ा औरो हाथी रामा, छूटो जैहै माई बाप भैया ए हरी ॥ छूटो जैहैं नात हित अपनो परायो रामा, छुटिहैं सब्जे पैसा औ रुपैया ए हरी ॥ कहै चिरजीवो छुटिहैं सुघरी तिरिअवा रामा, जल्दी चेत राधा के जँवैया ए हरी ॥५५॥

कजली—हरी ।

हमरे इजतिया के रखैया हमरे मालिक रामा, हम के

जनी जिअरा से भुलाव ए हरी ॥ मोत होत भाई बंद सब्जे हम के छोड़लें रामा, तूहूं जिन जिअरा के चोराव ए हरी ॥ हम के असरवा एकठो ठाकुर जो तुहरे ही रामा, अब जनि बेहम लगाव ए हरी ॥ कहे चिरजोवो मँथवा भुंइयां में झुकैले रामा, हम कि ये अफतिया से बचाव ए हरी ॥ ५५ ॥

कजली—हरी ।

हमरी नवरिया मांझे धार में घुमैले रामा, ठाकुर जो लगावें हमरे परवा ए हरी ॥ सुहवां उठा के चारो ओरियां हम देखोला रामा, कतहूँ नाही सूझैला असरवा ए हरी ॥ छितवा मलहवा अब सब दोहलें जववा रामा, लेई के किनरवां भइलें भरवा ए हरी । कहे चिरजोवो कहिया हमको तूं अन्हरब रामा, बिगरल चहैला सब्जे करवा ए हरी ॥ ५७ ॥

कजली—हरी ।

जेहि दिन हम जैबे अपने सामो के नगरिया रामा, नेहरे के लोगवा दूलम होइहें ए हरी ॥ जौनों घड़ी ऐहैं हमरे ससुरे के बम्हनवां रामा, घरवा में के लोगवा सब घबरैहैं ए हरी । सोरहो सिंगरवा कैके डोलिया जब बईठबे रामा, सँगवा के सहेलिया भेंटे ऐहें ए हरी । कहे चिरजोवी जहिया जैबे हम गवनवाँ रामा, फिरो ना अवनवाँ कबहूं होइहैं ए हरी ॥ ५८ ॥

कजली—हरी ।

जेहि दिन से परलें गोरिके मँगिया में सँदुरवा रामा अँखिया पर चढ़ावै उन्के लोगवा ए हरी ॥ लगतै बरिसवा धनके फिर गेलीं रोहनियां रामा, छोड़ि गेलीं फुटके पिउ के जोगवा ए हरो । फिरे लगलीं डिठिया उन्के जोबना उकसलें रामा, बढ़लें जिउ में लजिया के रोगवा ए हरी । कहे चिरजोवी धनके बोलिया मिठैलीं रामा, सौती के हिया में भैलें गोगवा ए हरी ॥ ५८ ॥

कजली—हरी ।

अबहीं कन्हैया तूंत लरिका गदेलवा रामा, जोबना के रसवा कैसे जनब ए हरी ॥ जमुना किनारे हमरी रोकैल डुगरिया रामा, हमरी इजतिया आज का हनब ए हरी । छोड़ब जब तू छैला जोने कहब तौने करब रामा, एतनो अरजिया हिअरा अनब ए हरो ॥ कहै चिरजीवो हमें के जाये द तू घरवा रामा, एतनो कहनवां हमरो मनब ए हरो ॥ ६० ॥

कजली—हरी ।

सांवरो सुरतिया उपरां जिअरा मोर लोभैलें रामा, दिनवां रतिया लागे ना पलकिया ए हरी ॥ भुखिया पिअ-सिया हम के एकहू ना सोहाले रामा, सूखो सूखो जाले मोर हलकिया ए हरी ॥ बरसैला पनियां औरो तड़पे ले

बिजुरिया रामा, देखि देखि उठे ले कलकिया ए हरी ॥ गोरीया गावेलीं चिरजोवो के कजरिया रामा, हम के झलके सामो के झलकिया ए हरी ॥ ६१ ॥

कजली—हरी ।

सैयां बिदेसो हमके छोड़ के अकेलो रामा, कुबरी से नेहियां तैं लगौले ए हरी ॥ ऐलें सवनवां गोरिया खेलेलीं कजरिया रामा, हम रहोलां जिउवा के चोरौले ए हरी ॥ बरसेला पनिया औरो तड़पे ले बिजुलिया रामा, जिअरा नाहो मानेला बुझौले ए हरी ॥ कहै चिरजोवी बिना सांवरे कन्हैया रामा, छतिया फटेले कजरो गौले ए हरी ॥६२॥

कजली—हरी ।

सैयां अपराधो नान्हे गैले तैं बिदेसवां रामा, हमरो जुअनियां मांटो भैलीं ए हरी ॥ सोरह रे बरिसवा कै त हमरो उमिरिया रामा, अबले नाहो सैंयां से जुटेलो ए हरी ॥ दुनियां के सुखवा हमत एकहु नाहो जनलो रामा, नहके हम जगतिया बिचवां ऐलीं ए हरी ॥ कहै चिरजोवी कसे सेहों मैं विपतिया रामा, सगरो उमिरिया निहफल गैलीं ए हरी ॥ ६३ ॥

कजली—हरी ।

गौना करौले अपुना चलले तैं बिदेसवां रामा, कबले मैं जोबनवां जोखिम जोगवों ए हरी ॥ रतिया अन्धेरो सावन

सूतेखिँव अकेली रामा, केकी ले जुअनियां बैरन भोगवों ए हरी ॥ जोबना के बोझवा अब त हमसे ना थम्हाल रामा, कहवां ले करेजवा आपन रोगवों ए हरी ॥ कहे चिरजीवो इक दिन पीतिवँ जो कन्हैया रामा, जिअरा के कालकिया सारी खोगवों ए हरी ॥ ६४ ॥

कजली—हरी।

गौना करौले अपना चलले तें बिदेसवा रामा, माझे-धारे नैया गोनिया काटले ए रो ॥ गौने के चुनरिया अबहीं धूमिलो न भेलीं रामा, बिचवें में सनेहिया सारी बटले ए हरो ॥ हमके बोला के कबहूं हँसि के कन्हैया रामा, अपने करेजवां नाहीं सटले ए हरो ॥ कहे चिरजीवो काहें तोरले तें असरवा रामा, कवने गुनहियां हमके छँटले ए हरो ॥

कजली—हरी।

अइलें सवनवां नाहीं ऐलें मनभवनवां रामा, कवने भवनवां बेल्हमैलें ए हरी ॥ कइलें गवनवां अपने लौइलें भवनवां रामा, झूठहू के सनेसवा दुलम कैलें ए हरी ॥ अलहरी जुअनियां हमरी सैयां बिन सिरैलीं रामा, मनहो के अरमनवां मनवां गैलें ए हरी ॥ कहे चिरजोवी अब त बोतें लें सवनवां रामा, अजहूं कन्हैया नाहीं ऐलें ए हरी ॥ ६६ ॥

कजलो—हरी।

दमरी के सेंधुरा के सैयां के गुनहियां रामा, ओरी नाहीं

जनली कीनो बतिया ए हरी ॥ जब से बिग्रहलें हरि मोर गैलें मधुबनवां रामा, झूठो ना पठौलें एको पतिया ए हरी॥ बरसेला पनियां गोरिया गावेलीं कजरिया रामा, सुन सुन के फटेले हमरो छतिया ए हरी ॥ कहे चिरजोवी इकं दिन ओतें जो कन्हैया रामा, सुखवा से कटातीं सारी रतिया ए हरी ॥ ६७ ॥

कजली—हरी ।

सावन के महिनवां में झँकोरैला पवनवां रामा, बदरा गरजैला पनियां बरसै ए हरी ॥ आधी आधी रतिया हम धन सूतोला अकेली रामा, सैयां बिन के बाला जोबना परसै ए हरी ॥ पपिहा पुकारे पिउ पिउ मारवा पिहोके रामा, पापीनी बिजुलिया फिर फिर दरसै ए हरी ॥ तौने पर चिरजोवी गावैं गोरिया सब कजरिया रामा, सुन सुन के बियोगी जिअरा तरसै ए हरी ॥ ६८ ॥

कजली—हरी ।

गोरिया गावेलीं सारी सावन में कजरिया रामा, हमरे जिअरा मारैला कटरिया ए हरी ॥ जब से सिधरले हरि मोर पुरुब बनिजिया रामा, साल भर की होले एक एक घरिया ए हरी ॥ भुखिया पिअसिया हमके एकहू ना सोहाले रामा, दोनहू के सूझै ना डगरिया ए हरी ॥ कहे चिरजोवी कहिया ऐहें मोर कन्हैया रामा, बीतल जाले सावन के बहरिया ए हरी ॥ ६९ ॥

कजली—ललना।

चल गाय आईं झलुआ के गीत ललना, जहाँ झुलत बाटैं राधे जी के मीत ललना॥ जहाँ पेंगिया मारेलीं ब्रजनार ललना, जहाँ कजरी उठेले जिउमार ललना॥ जहाँ कुंजबन अधिक सोहाय ललना, चिरजोवी जी के जियरा लोभाय ललना॥ ७०॥

कजली—ललना।

नाहीं झुलबै गोपाल जी साथ ललना, हमरे चोलिया में नावे लैं उ हाथ ललना॥ ऐसन रीति नाहीं हमके सोहाय ललना, जेमे अपने इजतिया नसाय ललना॥ चिरजोवी ऐसन झलुआ बिलाय ललना, केहू का करी हमसे रिसाय ललना॥ ७१॥

कजली—ललना।

उहै नागर छयल हमार मीत ललना, माथे मोर कै मुकुट पट पीत ललना॥ जवन ब्रज में करैलैं अनरीत ललना, जिनै नाहीं मानैं रजओ कै नीत ललना॥ चिरजोवो एक उहै हमार हीत ललना, हमके लागेला कहनवां सब के तीत ललना॥ ७२॥

कजली—ललना।

काहे आज काल फिरैलिव अकल ललना, मथवाँ चाँत के बेइलिया के तैल ललना॥ काहे अँचरा के छोर न स-

म्हार ललना, जिअरा नहके बिदेसिअन के मार ललना ॥ चिरजीवो जी के बात ला जवाब ललना, धन मान नाहि हो जेव खराब ललना ॥ ७३ ॥

कजरी—ललना।

तुहरे अँखिया में आज काल चोर ललना, काहें च, लल जालिव हमसे मुह मोर ललना ॥ काहें फिरलीं नज-रिया तुहार ललना, उफनावे लागल जिअरा हमार ललना॥ चिरजोवी तुहें कइलें सोसोल ललना, कहें भइलिउ सने-हिया के ढोल ललना ॥ ७४ ॥

कजली—ललना।

गोरी काहें तुहार मुहँवां अँजोर ललना, जनुक होय गेलिउ करिया से गोर ललना ॥ काहें निखरलि देहियाँ तुहार ललना, तरसावे लागल जिअरा हमार ललना ॥ तु-हरे छतिया पर कवन होवे चीज ललना, जनु जमलीं सने-हिया के बीज ललना ॥ चिरजीवो गावें कजरी के गीत ल-लना, कहाँ सिखलिव पिरितिया के रीत ललना ॥ ७५ ॥

कजली—ललना।

तुहार जोबना भयल बा अनमोल ललना, तुहरे झु-लवा में करेला कलोल ललना ॥ बिना झुलवा के मारे ला दरेर ललना, जैसे पथरा के नाहिन हो करेर ललना ॥ जब होलें कबों दुइन उघार ललना, हमरे होइन जालें जिअरा

की पार ललना ॥ चिरजीवो की दरसवा दिखाय ललना, लेल जिनगी क फल बिल्हमाय ललना ॥ ७६ ॥

कजली—ललना।

काहें मानेलिव न अरज हमार ललना। तुहार जोबना भयलवा उंजियार ललना ॥ अब आइल बाटीं सावन की बहार ललना। एमे हमरी लगा न देतिव पार ललना ॥ काहें खोवेलिव जुअनियां अपार ललना। धन कैसन होवे जियरा तुहार ललना । चिरजीवो तुहैं कहै दिलदार ललना। तुहरे बतिया कै नाहीं इतबार ललना ॥ ७७ ॥

कजली—ललना।

तुहरे गलवाँ में दँतवा के दाग ललना। केके गुहलिव सनेहिया के ताग ललना ॥ अबत हमरे तुहरे परि जैहैं लाग ललना। काहें सबसे करेलिव अनुराग ललना ॥ हमैं नाहीं निक लागै ई सोहाग ललना । तनी छोट कइ नेहियां कै बाग ललना ॥ चिरजीवो गावै कजली के राग ललना। धन तोहरे जोबनवा कै भाग ललना ॥ ७८ ॥

कजली—ललना।

काहें रोज जालिव गंगा जी नहाये ललना, बिना झुलवा के जोबना उठाये ललना ॥ तुहैं गुंडवन के डर हौ कि नाहीं ललना । तुहैं नहाये खातिर घर हौ कि नाहीं ल-

लना ॥ चिरजीवो आज कजरी के टीन ललना। जनि जैहै ओहि ओरियां कबौं फीन ललना ॥ ७९ ॥

कजली—ललना।

चल देखि आईं जुगलकिसोर ललना, जहाँ कजरी होखे ले झकझोर ललना ॥ उन्की पीतपट माथे परमोर ललना। जहाँ सखिया गावैलीं चारिओर ललना ॥ जहां बुंदिया परैले बड़े जोर ललना। घन बिजुली तड़पै करै सोर ललना ॥ चिरजीवो कहै बोलै बन मोर ललना। छवि मोहत मदन करोरोर ललना ॥ ८० ॥

कजली—ललना।

ओहि वृन्दावन बोलत बाटैं मोर ललना। राधेस्याम करैं कजरी के सोर ललना ॥ जहाँ जमुना बहैलीं बड़े जोर ललना। जहाँ सखियन खेलैंलीं झकझोर ललना ॥ जहाँ बुंनिया परैलैं घनघोर ललना। जहाँ बिजुली तड़पै चारि ओर ललना ॥ चिरजीवो कहै सावन के अँजोर ललना। जहँ सखियन के होखेला बटोर ललना ॥ ८१ ॥

कजली ललना।

कैसे देखे चलीं गंगा जी के बाढ़ ललना। बटिया चलत हमार काँपैला करेजवा, हमके चितवै नगरिया सज्जो ठाढ़ ललना ॥ ऐलैं सवनवां घेरि ऐलीं रे बदरिया, अबत बीत

गैलें सगरो असाढ़ ललना । कहै चिरजीवी कैसे निकसों बहरवां, हमके जोबना भयल बा जिउ के गाढ़ ललना ॥

कजली खेमटा ।

हरि के बाजल बन में बँसुरिया जियरा गयल पराये हाथ । छओ राग छत्तीस रागनी ताल तीन सौ साठ, तीनों ग्राम सात सुर संगो एकइस मुरछन लै गुन गाथ ॥ ब्रह्मा बिसुन महेस मोहिगे देव दनुज रिषिनाथ, जलचर थलचर सकल भुलाने मानुष छोड़ भये घर साथ । कहै चिरजीवी क्यों कहिये कहि न जाय कछु बात, धन वह बंसी धन बृन्दाबन धन धन गोकुल के नाथ ॥ ८३ ॥

कजली खेमटा ।

गोरिया खेलें घर घर कजरिया हमरे मारे करेजवाँ बान ॥ बलम बिदेस रइनियां कारी परे न कछु पहिचान, बादर गरजे लरजे जिअरा सुन सुन फाटे दूनों कान ॥ देखि ककरेजा सुखे करेजा अकिल होय हैरान, चुटकी चसका बढ़ावे जिउ में कजरी जारे आबहर प्रान ॥ कहै चिरजीवी क्यों कहिये हिय में आवै आन, आह करि साँस बन्द होइ जावे जब कोइ लेय सावनी तान ॥ ८४ ॥

कजली खेमटा ।

सुन्दर सावन मास सोहावन कजरी खेलैं राधे स्याम, बृन्दावन की कुञ्जगलिन में झुंड झुंड मिलि बाम ॥ कजरी

गावैं बंसो टरैं दोनो छैल बने अभिराम ॥ झूमर खेलैं चुटकी बजावैं झुकि २ करैं सलाम ॥ रहसैं बिहसैं गरे लगावैं हरि को ब्रज की नार ललाम ॥ कहै चिरजीवो वा छबि पै लाजि रहे रति काम, दामिनि लपटावो बन सोहै मोहै जुगलरूप सुखधाम ॥ ८५ ॥

कजली खेमटा ।

कजरी खेलैं खलक रिझावैं खासे सावन में दिल जान, झूमर खेलैं झूमि छयल संग लगैं करेजवा बान ॥ उचकैं उरज दबावैं हिय में चोखे नैनन मारैं बान ॥ चूमैं मुह चुमवावैं बर बस चोर करैं नुकसान, मोरैं भौंह मरोरैं गरदन जब परै पान की दान ॥ बेकल करैं बिन दाम खरीदैं रसिक लोग की प्रान, पैठैं जिव में जुलुम गुजारैं मारैं जब मुसकौंही सान ॥ कहैं चिरजीवो मन लूटैं लपट करै हैरान, हर दम हिय में पकरि लगावैं जब केहु लीय अनूठी तान ॥ ८६ ॥

कजली खेमटा ।

कजरी खेलैं नार अनूठी अपने यारन के ले संग ॥ सावन मास सोहावन लागे बादर बदले रंग, बरसै पानी जानो गावैं सुन्दर कजरी भरी उमंग ॥ छूअत कर छटकैं अलबेली यार लगावैं अंग, झूमर खेलैं रेलैं जोबन जालिम जकड़े जोम उतंग ॥ कहै चिरजीवो मुख चूमैं बेखुद होय अनंग, पहुंचि की मटुका पकरि नचावैं गावैं घेरि मचावैं जंग ॥ ८७ ॥

कजली. खेमटा ।

कजरी खेलैं कसक मिटावें हंसि हंसि राधे के सँग स्याम ॥ वृन्दावन में मगन भए दोउ राजत सुख के धाम, सुन्दर गोर स्याम अलबेले ले ले नाम पुकारें बाम ॥ कजरी गावें बंसी बजावें मारे दिल मिल तान, पिया के परसें गरे लगावें रस के खान छेल अभिराम ॥ कहै चीरंजीवी मुख चूमै चपल नैन गुन ग्राम, निरखि के एक एक छबि ऊपर लाजैं कोटि कोटि रति काम ॥ ८८ ॥

कजली खेमटा ।

कजरी जिव की कलक मिटावै जानो खेलो हमरे संग । लाज लिहाज छोड़ कर गोरी हिय में धरो उमंग, पहिरो नया नया ककरेजा छाती चोली लसी उतंग । कम्मर कसी कछांड़ा मारो झूमो रँगो अनंग, लाओ सखिअन के सब अपने गावो कजरी तान तरंग । कहै चीरंजीवी मन हुलसो हंसो मचाओ जंग, राजो होव रंग पहिचानो भूषन सजो अनूठ अंग ॥ ८९ ॥

कजरी—खेमटा ।

धन धन सावन के महिनवां धन धन कासी नगरी । धन मेहरारू मरद सहर के धन उनकै बन ठन, धन तेह-वर वनके तयरिया हमसे बिचरै ना हरी । धन ककरेजा काढ़े करेजा धन लटकन अटकन, धन बिन भुलवा के

तिरिया क घूमै सारो नगरी । धन टोका महाबीरो लाला धन दाल मोरैलोवाल, धन चौरजिवो कै कजरिया गोरिया गावैं घरी घरी ॥ ९० ॥

कजरी—खिमटा ।

हमकै तनिको ना सोहाले मिरजापूरवा कै चाल । बिना रे बिअहवे जँहवाँ लागेले मेहँदिया, मथवाँ डकियू कै टिकुलिया साटै जिउवा कै जवाल । नैहर में जहाँ घर घर घूमैं ससुरे करैं खियाल, जहँवाँ सूते खातिर गुजरे ले मरदवन पर सवाल । गली गली चिरजीवो रिझावैं यारन करैं हलाल, उन्कै सगरो नगरिया में कसबियन कै चाल ॥ ९१ ॥

कजरी—नउनियाँ ।

सैयाँ हमकै सूते कै बोलावै रे नउनियाँ । चुटकी बजावै सिटिआवै रे नउनियाँ, अंखिअन यनियाँ बुझावै रे नउनियाँ । भौजी मारे बोली भटकावै रे नउनियाँ, हमकै नहिरे कै घर नाहीं भावै रे नउनियाँ । कहै चिरजीवो जिउवा भावै रे नउनियाँ, हमकै एकहू अकुफिया न आवै रे नउनियाँ ॥ ९२ ॥

कजरी—नउनियाँ ।

सैयाँ मोकै कजरी सिखावै रे नउनियाँ । लिखि लिखि कगदा पढ़ावै रे नउनियाँ, मोकै साथै अपनै गवावै रे नउनयाँ । गाओं तब छतिया लगावै रे नउनियाँ । रहि रहि रस

उपजावे रे नउनियाँ। कहे चिरजीवो मन भावें रे नउनियाँ, घरी घरी रतियाँ जगावे रे नउनियाँ ॥ ८३ ॥

कजरी—नउनियाँ ।

हमरो बलमुवाँ नदान रे नउनियाँ। टिकुली माँगो त लावे पान रे नउनियाँ, सेन्दुरा माँगो त लावे धान रे नउनियाँ। मिसिया माँगो त लावे भाँग रे नउनियाँ, हिअरा लगों त हो उतान रे नउनियाँ। सूते के कहो त तोरे तान रे नउनियाँ, देखि देखि जरेला परान रे नउनियाँ । कहे चिरजीवो जिआ मान रे नउनियाँ, जरे ऐसन अरकी के बान रे नउनियाँ ॥ ८४ ॥

कजरी—नउनियाँ ।

कौने देसे दुलहा बिकाले रे नउनियाँ। उमड़त जोबना उभड़ि गेलें जिअरा, हिअरा में मदन निकाले रे नउनियाँ। मथुरा में ढ़ढ़लूं ब्रन्दा रे बन ढुढ़लूं, गोकुला में सुने लूं ठिकालें रे नउनियाँ। कहे चिरजीवो चल मोके तें किआ दे रे, के सैयाँ बिना कलक निकाले रे नउनियाँ ॥ ८५ ॥

कजरी—साँवर गोरीया ।

अबन भेलू तुहँज सयाँन साँवर गोरिया। तब त तूं खेलत रहलिव सुपली मउनियाँ, पै अब त भेलू सैयाँ के परान साँवर गोरिया ॥ तब त तूं तनिको रस मरमो न जान हो, पै अब त भले चोन्हैलिव जुआन साँवर गोरिया ॥ तब त तूं

रहलिव धन लरिका गदेलवा, पै अब त भैलिव सुन्दर हलुआन सँावर गोरिया ॥ तब त चिरजीवो तू हे केहू नाहीं जाने हो, पै अब त तूहें जानेला जहान सँावर गोरिया॥८६॥

कजरी—सँावर गोरीया ।

एकहु न भैलें जिउकै आस सँावर गोरिया । बढ़ल आवे जोबना सोहाइल आवे देहियाँ, सैयाँ लिहलें रन बनवाँस सँावर गोरिया ॥ गरजेला बदरा चमकि जाले बिजुली देखि देखि उफनै ले साँस सँावर गोरिया ॥ गोरिया गावेलीं चिरजोवो के कजरिया, मोर जिवा निपट उदास सँावर गोरिया ॥ ८७ ॥

कजरी—सँावर गोरिया ।

कैसे कहों ससुर कै बात सँावर गोरिया । सैयाँ जब ऐलें मोरे सूते के सेजरिया, जिवा भैलें पिपरा के पात सँावर गोरिया ॥ सैयाँ जब लिहलें मोके छतिया में लगाय के रस बस भैलें सब गात सँावर गोरिया ॥ गोरिया गावेलीं चिरजोवो कै कजरिया, लोगवा सुनेलें मुसकात सँावर गोरिया ॥

कजरी—अलबेलवा ।

बँसिया बजावे बन मोर अलबेलवा । माथे पर मकुट मकुट सोहे हथवा, चितवेला कठिन मरोर अलबेलवा ॥ कजरी के गीत गावे ग्वालन के सँगवाँ, सटि सटि आवे मोरी ओर अलबेलवा ॥ कहे चिरजोवो सुन्दर सावन के महिनवाँ, कजरी गावेला रस-बोर अलबेलवा ॥ ८८ ॥

कजरी—दूसरी धुनि।

बितायल चलि जाला रे सवनवाँ। गरजेला बदरा छितायल जाला जोबना, कि तोरे बिना सूना रे भवनवाँ॥ कइले बिअहवा पापो चलले रे बिदेसवा, बहुरि कब करबे रे भवनवाँ। कहै चिरजीवो सुन तैं मोर रे बलमुवाँ, अब कहिया लेइ जैबे मोर गवनवाँ॥ १००॥

कजरी—पहली की धुनि।

जिआ के मोरे लागलि बाय तिरिअवा। कसि कसि चोलिआ उतान होत जाले रे, बोअेले खाले झूठे मूठ किरिअवा॥ कहै चिरजीवी केतनो जिआ के बुझाओं रे, तबो न जाला दिलवा के दलगिरिअवा॥ १०१॥

कजली—अपरधिया।

नाहक मोंके बधले रे अपरधिया। बबस आय आय काँधा मोरी तैं नगरिया, सनेहिया नधले रे अपरधिया॥ रोज रोज लागि मोरे पखवाँ कवरवाँ, झुठहिं अवरधले रे अपरधिया। कहे चिरजोवी जो तैं छोड़हो के रहले, काहे के मोके सधले रे अपरधिया॥ १०२॥

कजली—माटी मिलना।

कबते आँखो तकले रे माटो मिलना। जतिया धरमियाँ तैं दूनो मोर गँववले, एको न बाको रखले रें माटो मिलना॥ कहै चिरजावो मोके मटिया में मिलौले, कइले जौन भखले रे माटो मिलना॥ १०३॥

कजली—मलिनिया।

काहे मोरे बलमा लोभावे रे मलिनियाँ। सोरह सिँगार कैके आवे रे मलिनियां, नेंहियाँ के गजरा देखावे रे मलिनियाँ॥ कसि कसि चोलिया उँचावे रे मलिनियाँ, जोबना के फूल गमकावे रे मलिनियाँ। कहे चिरजीवी रस छावे रे मलिनियाँ, हँसि हँसि सैयाँ बेलहमावे रे मलिनियाँ॥१०४॥

कजरी—करेजवा।

सैयाँ भइलैं डूमरी के फूल रे करेजवा। गवना करौले अपने छोले मधुबनवाँ, हमरी सुरतिया गैले भूल रे करेजवा॥ बरसैला पनियाँ गोरिया गावेलीं कजरिया, हमरे उठैला जिआ सूल रे करेजवा। कहे चिरजीवी हमार असों के सवनवाँ में, भयल बाटैं जोबना फजूल रे करेजवा॥ १०५॥

कजली—करेजवा।

मोर जिआ मोरे बस नांहिं रे करेजवा। निसि अँधियारी कारी बिजुली तड़पे रे, मदन उबेला हिया माँहि रे करेजवा॥ देखो चारि ओरियां न सूझे कौनिउ ओरिया, रहि जालिवँ सेजिया कराहिं रे करेजवा॥ कहै चिरजीवी पिया अजहु न ऐलें रे रतिया बिताऊं कारि आहि रे करेजवा॥ १०६॥

कजरी।

बढ़ल चलि आवे रे जोबनवां। कैसे के मैं आऊं धन

तोरे रे अँगनवां, सेजिया लरजावे रे जोबनवाँ ॥ केतनो मैं खोचि खोचि अँचरा बढ़ाओं रें, तबहुं उंचकावे रे जोबनवाँ ॥ कहै चिरजोवी कैसे निकरो रे बहरवां, चलले दलकावे रे जोबनवाँ ॥ १०७ ॥

कजरी ।

कन्हैया मोसे माँगे रे जोबनवां। जमुना के तोरे तीरे बँसिया बजावे, से हिया के बीचे मारेला खोभनवां ॥ सासु मोके मारे ननद गरिआवे, से पिया के मोके लागेला लोभनवां ॥ कहै चिरजोवी अबत जैवों ओंके संगवां, उहई मोके लागेला सोभनवां ॥ १०८ ॥

सावनी ।

राधे माधो झुललें हिंडोरवां हो। सखिया मारें पेंगिया सम्हार ॥ हरि जी के सोहै मकुट पोताम्बर, राधे जी के चुनरी औ हार ॥ हरि जी बजावे लें बँसुरिया हो, राधे गावें हुलसि मलार ॥ कहै चिरजोवी ओहि बृन्दाबन, नित राधे माधो के विहार ॥ १०९ ॥

सावनी ।

परला हिंड़ोरवा सिरि बृन्दावन, गोरिया सब गावेलीं मलार ॥ पेंगिया मारेलें राधे माधो हो, छलके लें जोबना के भार ॥ हुलसि हुलसि हिअरा लागेलें, कहि नहिं जाले ऊ बहार ॥ कहै चिरजोवी ऐसे सावन, उपजैला हरष अपार ॥ ११० ॥

सावनी ।

सैयां मोके झलुआ झुलावेलें मोहि जिया तनि न सोहाय ॥ एक त मैं हाल के आइल, दूजे जोबन लहराय ॥ सैयां बेदरदो नाहीं माने लें, मोके देलें बर्बस चढ़ाय ॥ कहै चिरजीवो ननदो देखेलीं, जिअरा लाजन गड़ि जाय ॥ १११ ॥

सावनी ।

सावन आये सैयां नाहीं आये, बीत गेलें सगरो असाढ़ घेरलीं बदरिया बुनिया टपके ले, चहुंदिसि आय गेलीं बाढ़ ॥ परैला हिं ·रवा गोरिया झूलेलीं, हम धन चितईला ठाढ़ ॥ कहै चिरजीवो एक सैयां बिना, भयल बा जोबनवां हमके गाढ़ ॥ ११२ ॥

सावनी ।

सावन आये जिअरा तरसैला, सैयां हमरे गइलें बिदेस ॥ हम धन हरि बिन व्याकुल, हरिं नाहीं भेजलें सनेस ॥ लोगवा देखि जिभि चांटैला, हम धन मनई महेस ॥ कहै चिरजीवी हम धन समरथ, हमें तित रहई अनेस ॥ ११३ ॥

सावनी ।

सावन सुरति न लिहलें हो, हमे तजि गइलें बिदेस ॥ लोगवा गनैला हमके बाउर, हम धन झारी ना केस ॥ देसवा खेलेला सब सावन, हमरे जिआ में पसोपेश ॥ कहै चिरजीवो अपने हरि पर, धरबै जोगिनियां के भेस ॥ ११४ ॥

॥ इति ॥

काव्य के ग्रन्थ।

अलकशतक और तिलशतक	/)	अलङ्कारदर्पण	/)
अंगदर्पण	/)	अन्योक्तिकल्पद्रुम	।/)
अंगादर्श	।)	अष्टयाम	/)
अलङ्कारमणिमञ्जरी	।)	इश्कनामा	/)
उपदेशपंचाशिका	॥	उपालम्भशतक	/)
ऊधवोपदेश	।/)	कवित्तवर्णावलि	॥)
कविकुलकण्ठ भाग	/)	कलियुगपचीसी	/)
कर्णाभरण	/)	कविकीर्तिकलानिधि	/)
काव्यनिर्णय	॥।)	काशी कविसमाज	/)
काशी कविसमाज प्र० भा०	/)	काशीकविसमाज २ भा०	॥।)
काशी कविसमाज ३ भाग	॥।)	काशीकविसमाज ४ भा:	॥)
काशी कविमण्डल की समस्यापूर्तियां प्रथम भाग			॥।/
तथा दूसरा भाग	।)	कुंडलिया	)॥
केशवदासकृत नखसिख	/)	केशवमहात्म्य भाषा	।)
घनाक्षरीनियमरत्नाकर	।)	चरणचन्द्रिका	/)
चेतचन्द्रिका	।/)	छन्दःप्रभाकर	१५)
छंन्दरत्नावली	/)	छन्दोमञ्जरी	॥
जगद्विनोद संपूर्ण	५)	जुगलरसमाधुरी	/)॥
जञ्जीरा	/)	ददरीक्षेत्र माहात्म्य	/)
दीपप्रकाश	/)	दृष्टान्ततरंगिणी	८)
देवयानी	/)	नारायणप्रकाश	१॥/
नखसिख	/)	नीतिकुण्डल	/)
पदमावत	१॥)	पद्माभरण	/
पजनेसप्रकाश	।)	प्रबोधपचासा	/)

प्रतापमोदतरङ्गिणी	≡)	पावसपचासा	=)
प्रात:स्तुतिपाठ	-)	प्रियाप्रीतमबिलास	।)
प्रेममाधुरी	≡)	प्रेमरत्नमाला	=)
प्रेमलतिका	।=)	फागचरित्र	।=)
बजरंगबत्तीसी	-)	बलभद्रकविकृत नखसिख	-)
बसन्तमञ्जरी	≡)	बसन्तविकाश	=)
बद्रीनाथयात्रा	-)॥	बलबीरपचासा	=)
बदमाशदर्पण	-)॥	बामामनरञ्जन	।)
बीरोल्लास	।)	बिरहदिवाकर	≡)
बिहारीसतसई	१॥)	वृन्दविनोदसतसई	।)
बिरहा	-)	वृन्दावनशतक	-)
बुढ़ियाबखान	-)	भ्रमरगीत	-)
भड़ौआसंग्रह चारों भाग	॥=)	भाषा सत्यनारायण	=)
भाषाभूषण	=)	भावबिलास	।=)
भवानीबिलास	।=)	भावरसामृत	।)
भक्तिबिलास	≡)	मनरञ्जनसंग्रह	।≡)
मनरञ्जनप्रकाश	।)	मनोबिनोद	=)
महेश्वरचन्द्रचन्द्रिका	१॥)	महेश्वरसुधाकर	॥)
महेश्वरबिलास	१)	महेश्वरविनोद	१)
मनोजमञ्जरी चारों भाग	१=)	मानसविनोद	।)
मानसरहस्य	।)	रतनहजारा	॥)
रसकुसुमाकर	५॥)	रसप्रबोध	।=)
रसराज	।)	रहस्योत्सव	=)
रसकौमुदी	॥)	रसबिलास	।)

मैनेजर भारतजीवन प्रेस बनारस ।